अध्याय-4

आवास-योजना

आवास योजना मानवीय गतिविधियों, भू-दृश्य तथा पर्यावरण के बीच अंत:क्रिया का अध्ययन करता है। आवास योजना न केवल आवासीय वितरण का अध्ययन करती है अपितु यह प्राचीन संस्कृतियों की सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक पक्षों का भी अध्ययन करती है। यह लोगों के प्रवास, जनसंख्या वृद्धि एवम् कमी, वातावरणीय दशाएं और तकनीकी परिवर्तनों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत अध्याय में साल्हावास खंड की आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन आवास योजना का अध्ययन किया गया है।

4.1:आवास योजना

आवास योजना का अध्ययन पुरातात्विक शोध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एल.एच.मॉर्गन प्रथम शोधकर्ता था जिसने उत्तरी अमेरिका के प्रागैतिहासिक कालीन लोगों के सामाजिक ढांचे को समझने के लिए आवास योजना का अध्ययन किया। अन्य नृतत्वशास्त्री स्टीवर्ड (1937) ने नृवंश विज्ञान की समरूपता, तकनीकी कारक एवं सामाजिक संगठन के आधार पर आवास योजना का अध्ययन किया। जी.आर.विली (1953) ने आवास योजना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने पुरातत्व में क्षेत्रीय स्वरूप की अवधारणा को लागू किया। विली की व्याख्या प्रागैतिहासिक कालीन वीरू वैली के कालक्रम, आवास योजना तथा सांस्कृतिक संगठन पर आधारित थी। उन्होंने आवास योजना के विषय में कहा है कि आवास योजना वह है जिसमें मानव भू-दृश्य पर किस प्रकार जीवन निर्वाह करता है। यह उल्लेख करता है कि मानव रहन-सहन की व्यवस्था प्रकृति के साथ सामंजस्य रखते हुए किस प्रकार करता है तथा सामुदायिक जीवन व्यतीत करने हेतु किस प्रकार वह अन्य बहुद्देशीय इमारतों का निर्माण करता है। विली के अनुसार किसी पुरातात्विक संस्कृति की आवास योजना प्राकृतिक वातावरण, बस्ती निर्माण की तकनीकी स्तर, विभिन्न संस्कृतियों के पारस्परिक सामाजिक विचार-विमर्श, तथा शासकीय नियंत्रण पर निर्भर करती है (विली 1953: 1)।

वोग्ट (1956: 174-75) ने आवास योजना के अध्ययन के लिए स्थानीय वर्ग पर बल दिया है जैसे व्यक्तिगत घरों के प्रकार, व्यक्तिगत घर का स्वरूप, व्यक्तिगत घरों का अन्य सामुदायिक समूह अथवा गांव के अन्य घरों के साथ समरूपता अथवा संबद्धता, स्थानीय व्यक्तिगत घरों का अन्य स्थानीय स्थापत्य विशेषताओं के साथ संबंध, संपूर्ण गांव की सामुदायिक योजना का स्थानीय

विशेषताओं के साथ संबंध ताकि बड़े पैमाने पर एक समान विशेषताएं बड़े पैमाने परदृष्टिगोचर हो सके। आवास योजना के अध्ययन हेतु वोग्ट ने तीन प्रकार के अध्ययन पर बल दिया है- प्रथम मानव के निवास स्थान के साथ-साथ भौगोलिक विशेषताओं जैसे स्थलाकृति, मृदा, वनस्पति प्रकार, वर्षा क्षेत्र का अध्ययन करना। दूसरा यह है कि वहां के सामाजिक ढांचे के विषय में जानना ताकि मानवीय सामाजिक एवम् राजनीतिक संगठन तथा सांस्कृतिक रीति-रिवाजों, अनुष्ठानों के विषय में जानकारी प्राप्त हो सके। तीसरा किसी पुरास्थल से प्राप्त अवशेषों के आधार पर समय के साथ किसी संस्कृति में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना (वोग्ट 1956: 175)।

सैंडर (1956: 116-26) ने मानवीय आवास योजना के वितरण को कृषि व्यवस्था, स्थानीय विशेषताओं एवं पारस्परिक क्षेत्रीय विचार-विमर्श (पारस्परिक आदान-प्रदान) के परिप्रेक्ष्य में परिभाषित किया है। उन्होंने सामुदायिक आवास योजना तथा क्षेत्रीय आवास योजना के स्वरूप में अंतर स्पष्ट किया है। उन्होंने सामुदायिक आवास योजना के अंतर्गत समुदायोंके व्यष्टि प्रकरण अध्ययन, जनसंख्या वितरण, गलियों एवम् गृह विन्यास प्रकार, सामुदायिक संस्थाओं, सामुदायिक स्थानों एवम् संगठनों और सामूहिक जनसंख्या घनत्व का अध्ययन किया जा सकता है। उनके अनुसार क्षेत्रीय आवास योजना के अंतर्गत सामुदायिक आकार, दो समूहों अथवा संस्कृतियों के बीच दूरी, जनसंख्या घनत्व और दो समूहों के बीच प्रतीकात्मक संबंध का अध्ययन किया जाता है।

के.सी. चांग (1958: 299-306) ने आवास योजना और सामूहिक योजना का वर्णन किया है उन्होंने आवास योजना को परिभाषित करते हुए कहा है कि मानवीय आवास भू दृश्य पर भौगोलिक एवं पर्यावरण दशाओं को ध्यान में रखते हुए बसते हैं। उन्होंने सामूहिक योजना को परिभाषित करते हुए कहा है कि किसी स्थल के निवासी विभिन्न ढांचों अथवा स्थापत्य शैली का अनुकरण समूह के रूप में करें और समूह संयुक्त रूप से उस शैली का अनुकरण करें। चांग ने आवास की समय एवम् स्थान के साथ सम्बद्धता, परस्पर सांस्कृतिक अध्ययन, आवास का वितरण और नृवंश विज्ञान संबंधी मॉडल आदि आवास योजना के अध्ययन संबंधित संकल्पना प्रकाश में लाए।

ट्रिगर (1965) ने आवास योजना के अध्ययन हेतु दो दृष्टिकोण बताएं हैं- पारिस्थितिकी तथा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण। पारिस्थितिकी संबंधी दृष्टिकोण के अनुसार मानव का भू-दृश्य, वातावरण तथा तकनीकी आवास के साथ अध्ययन किया जाता है और समाजशास्त्रीय आवासीय दृष्टिकोण समाज, राजनीति तथा धार्मिक संगठन पर आधारित होता है। उन्होंने आवास योजना को तीन वर्गों में

विभाजित किया हैं- 1. व्यक्तिगत आवास 2. सामूहिक योजना 3. क्षेत्रीय योजना। व्यक्तिगत गृह (आवास), जीवन-निर्वाह व्यवस्था, आवास बनाने हेतु सामग्री, तकनीकी ज्ञान और जलवायु आदि पर निर्भर करती है। सामूहिक योजना किसी एक विशिष्ट समूह द्वारा निर्मित ढांचा या आवास होता है। सामूहिक योजना समूह अथवा समुदाय के आकार एवं उसके स्थायित्व पर मुख्यतः निर्भर करती है। इसके अतिरिक्त पर्यावरणीय दशाओं, जीवन निर्वाह व्यवस्था तथा तकनीकी शैली भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। क्षेत्रीय योजना प्राकृतिक संसाधनों तथा आर्थिक कारकों की उपलब्धता जनसंख्या के वितरण को सुनिश्चित करती है।

अधिकतर आवास योजना संबंधी अध्ययन उपर्युक्त सिद्धांतों पर ही आधारित हैं। विश्व के भिन्न-भिन्न स्थानों पर आवास संबंधित महत्वपूर्ण शोध कार्य भी किए गए हैं जिनमें चांग (1958), ट्रिगर (1965), एडम (1965) और जॉन्स (1961) आदि सम्मिलित हैं। भारत में भी बहुत से शोधकर्ताओं ने आवास योजना संबंधी अध्ययन किया है जिसमें पश्चिमी भारत में धवलीकर और, मध्य भारत में धवलीकर, सौराष्ट्र में पोस्शेल, हुण्णसगी नदी घाटी में पद्दैया, गंगा-यमुना दोआब में बी.बी.लाल, मध्य ताप्ती नदी घाटी में शिंदे, पूर्वी भारत में रे, दक्षिणी गोदावरी नदी घाटी में मूर्ति, पेन्नार नदी घाटी में वेंकटसुभैया, हरियाणा के सोनीपत जिले में ठाकरान, कश्मीर क्षेत्र में शाली आदि शामिल हैं।

इस अध्याय में हरियाणा के झज्जर जिले में साल्हावास खंड की आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन आवास योजना का अध्ययन किया गया है। वर्तमान अध्ययन ट्रिगर द्वारा बताए गए तीसरे वर्ग क्षेत्रीय आवास योजना पर मुख्यत: आधारित है। आवास योजना के अध्ययन में कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा क्योंकि कुछ पुरास्थल कृषि कार्य एवं आधुनिक बस्तियों के बस जाने के कारण अस्त-व्यस्त एवम् कुछ पुरास्थल नष्ट भी हो गए हैं। जिससे उनके बारे में जानकारी एकत्रित करने में कठिनाइयां हुई। कुछ पुरास्थल बहु-सांस्कृतिक क्रम को प्रदर्शित करते हैं। अतः इस कारण प्राचीन आवासों का यथार्थ क्षेत्रफल का पता लगा पाना अत्यंत कठिन है। विभिन्न संस्कृतियों के आकार एवं उनका वितरण मुख्यतः मृदभांड व अन्य सांस्कृतिक सामग्री पर आधारित है। केवल सर्वेक्षण के आधार पर किसी पुरास्थल का सांस्कृतिक क्रम, यथार्थ आकार एवं किसी विशिष्ट सांस्कृतिक काल का यथार्थ आकार बता पाना अत्यंत मुश्किल कार्य है। यद्यपि एकत्रित आंकड़ों व जानकारी के आधार पर आवास योजना को समझने का प्रयास किया गया

है।

4.1.1: आवास योजना का वितरण

सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड की कुल 48 पुरास्थलों का दौरा किया। साल्हावास खंड में सर्वप्रथम निवास करने वाली संस्कृति आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति थी। इन संस्कृतियों की आवास योजना मुख्यतः बाढ़ निर्मित उपजाऊ मैदान, अनुकूल वातावरण दशाएं, नदी प्रवाह तंत्र, प्राकृतिक संसाधनों अथवा खनिजों की उपलब्धता आंतरिक एवं बाह्य व्यापारिक मार्ग पर निर्भर करती है। ये सभी कारक आवास योजना के उदय एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन संस्कृतियों की आवास योजना उपजाऊ एवं कृषि योग्य भूमि में स्थित थी। इस क्षेत्र में अनुकूल परिस्थितियाँ होने के कारण आरंभिक हड़प्पा संस्कृति के प्रमाण मिले हैं। यह क्षेत्र उपजाऊ भूमि तथा सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता से युक्त था। इस क्षेत्र के दक्षिण एवं उत्तर पूर्व में स्थित अरावली की पहाड़ियों में खनिज तत्व मौजूद थे।

तालिका: 4.1 साल्हावास खंड में सांस्कृतिक क्रम

सांस्कृतिक काल	पुरास्थल
आरंभिक हड़प्पाकाल	01
उत्तर हड़प्पाकाल	05
पूर्व मध्यकाल	45

4.1.1.1: क्षेत्रफल के आधार पर आवासीय वितरण

साल्हावास खंड में केवल एक आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल है। यह पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। यह पुरास्थल बहु-सांस्कृतिक है। ढ़ाकला-3 पुरास्थल आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल तथा पूर्व मध्यकालीन संस्कृति वाला पुरास्थल है। इस पुरास्थल के बहु-सांस्कृतिक होने के कारण इसकी आरंभिक हड़प्पा संस्कृति के यथार्थ आकार को जान पाना अत्यंत कठिन है। ढ़ाकला-3 पुरास्थल का अनुमानित आकार 3 हेक्टेयर है।

तालिका: 4.2 आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े

(अनुमानित आवासीय आंकड़े)

कुल पुरास्थल	01
ज्ञात आकार के पुरास्थल	00
ज्ञात आकार के पुरास्थलों का क्षेत्र	00 हेक्टेयर
अज्ञात आकार के पुरास्थल	01
अज्ञात आकार के पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	03 हेक्टेयर
पुरास्थल का औसत आकार	03 हेक्टेयर
कुल पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	03 हेक्टेयर

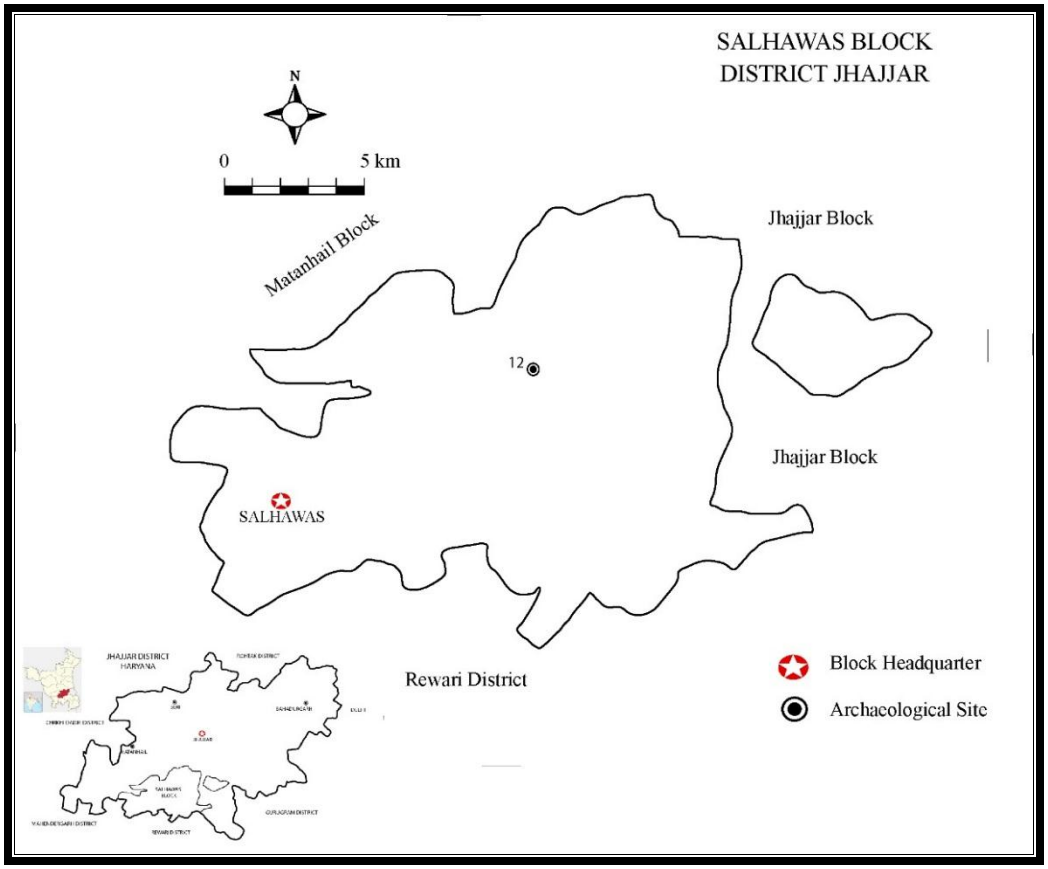

चित्र: 4.1 साल्हावास खंड के आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल

साल्हावास खंड में कुल 5 उत्तर हड़प्पा कालीन पुरास्थल हैं जिनमें से तीन पुरास्थल (ढ़ाकला-1, मुंढ़ेरा-3, पटासनी) **एकाकी संस्कृति** से संबंधित हैं। इन तीनों पुरास्थलों पर केवल उत्तर हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक अवशेष फैले हुए हैं जबकि अन्य दो पुरास्थल बहु-सांस्कृतिक कालीन हैं। इनमें से कासनी-1 पुरास्थल पर उत्तर हड़प्पाकालीन एवम् पूर्व मध्यकालीन तथा ढ़ाकला-3 पुरास्थल पर आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल और पूर्व मध्यकालीन संस्कृतियों के सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। अतः बहु सांस्कृतिक क्रम के कारण यह पता लगाना अत्यंत कठिन है कि उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति का यथार्थ आकार कितना था। दो उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थलों का यथार्थ आकार 6 हेक्टेयर क्षेत्र है। इससे प्रमाणित होता है कि उत्तर हड़प्पाकालीन लोग छोटे-छोटे गांव में निवास करते थे। इन पुरास्थलों का अनुमानित आकार 10.5 हेक्टेयर है तथा प्रत्येक आवास का औसत आकार 2.1 हेक्टेयर है।

तालिका: 4.3 उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े

(अनुमानित आवासीय आंकड़े)

कुल पुरास्थल	05
ज्ञात आकार के पुरास्थल	03
ज्ञात आकार के पुरास्थलों का क्षेत्र	06 हेक्टेयर
अज्ञात आकार के पुरास्थल	02
अज्ञात आकार के पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	4.5 हेक्टेयर
पुरास्थल का औसत आकार	2.1 हेक्टेयर
कुल पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	10.5 हेक्टेयर

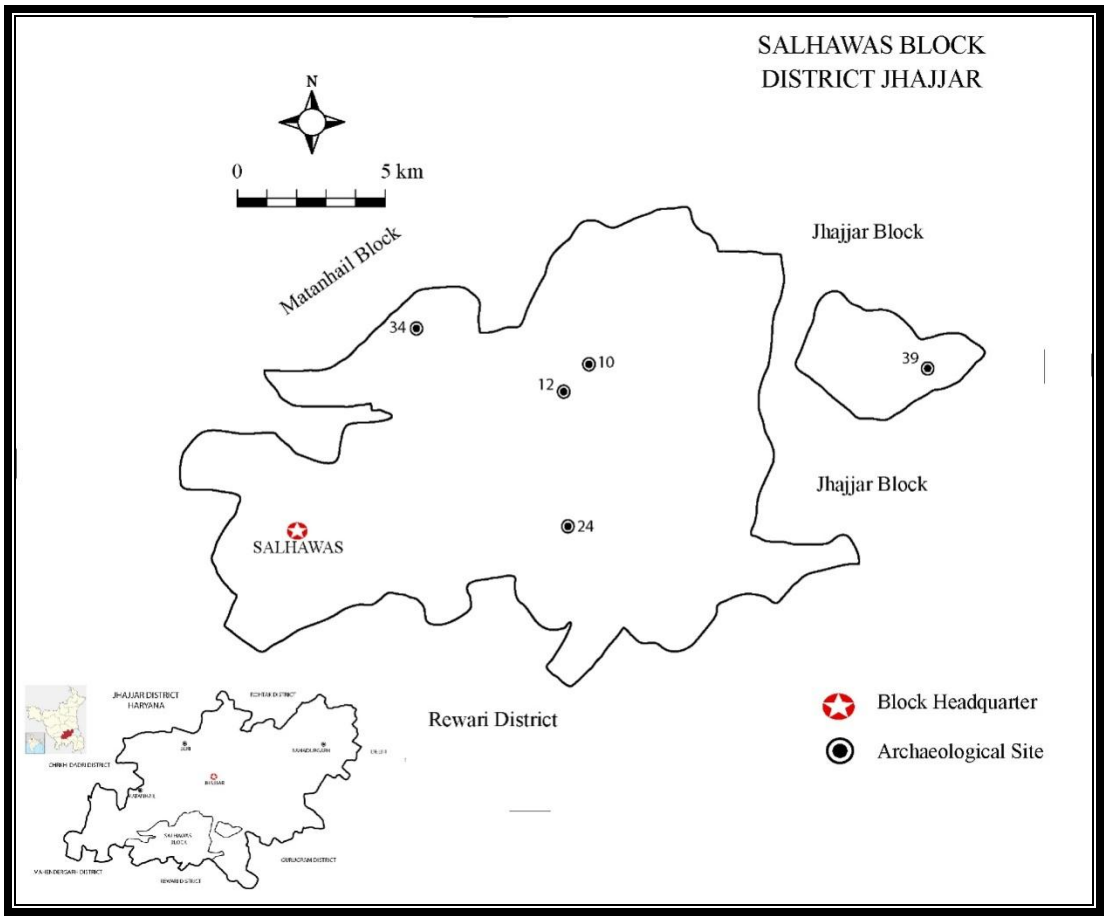

चित्र: 4.2 साल्हावास खंड के उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थल

साल्हावास खंड में पूर्व मध्यकालीन संस्कृति से संबंधित 45 पुरास्थल हैं। इस काल के दौरान लगभग सभी आवास ग्रामीण स्वरूप के हैं। ये पुरास्थल छोटे आकार के हैं केवल दो पुरास्थल बहु सांस्कृतिक हैं जो लगभग 4.5 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए हैं। प्रत्येक पुरास्थल का औसत आवासीय क्षेत्र 2.5 हेक्टेयर है। इन पुरास्थलों का अनुमानित आवासीय क्षेत्र और ज्ञात पुरास्थलों का आकार 112.5 हेक्टेयर है। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े नीचे दिए गए हैं:

तालिका: 4.4 पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े

(अनुमानित आवासीय आंकड़े)

कुल पुरास्थल	45
ज्ञात आकार के पुरास्थल	45
ज्ञात आकार के पुरास्थलों का क्षेत्र	112.5 हेक्टेयर
अज्ञात आकार के पुरास्थल	00
अज्ञात आकार के पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	00 हेक्टेयर
पुरास्थल का औसत आकार	2.5 हेक्टेयर
कुल पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	112.5 हेक्टेयर

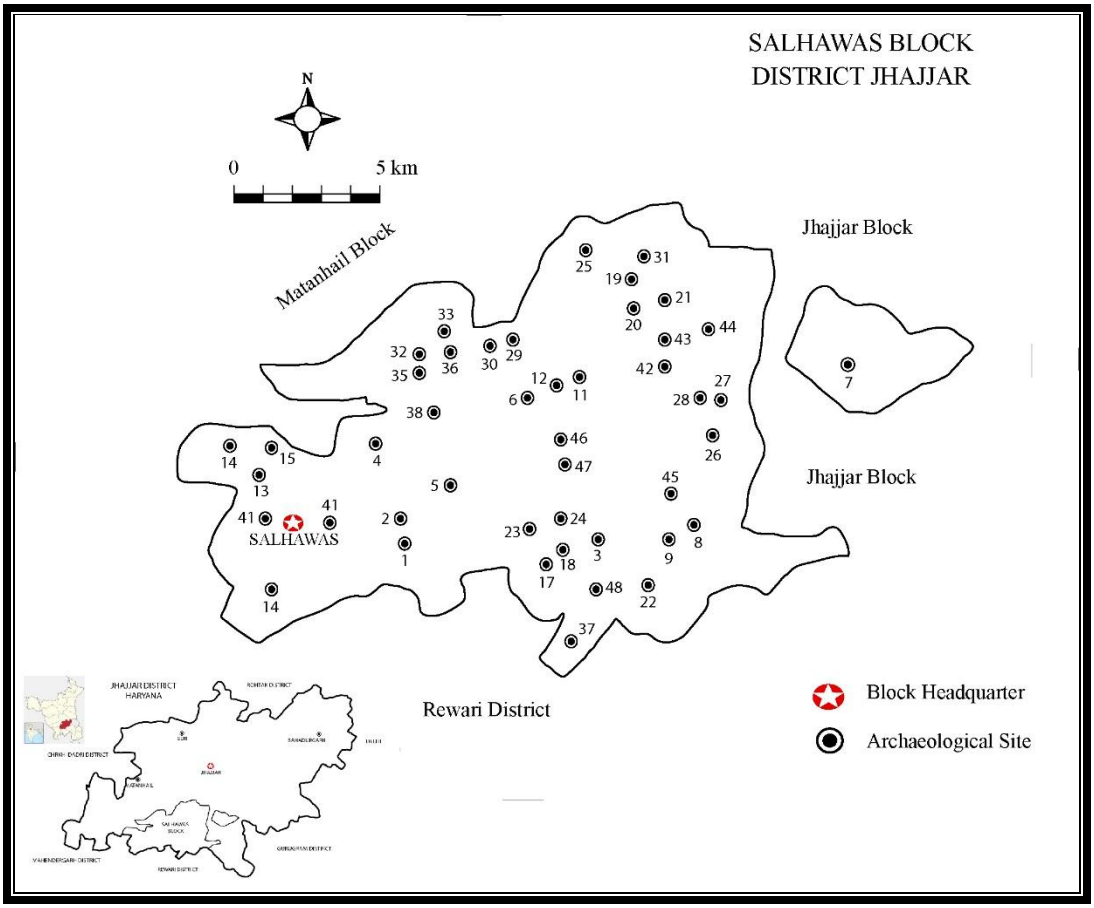

चित्र: 4.3 साल्हावास खंड के पूर्व मध्यकालीन पुरास्थल

4.1.1.2.: मृदा क्षेत्र के आधार पर आवासीय वितरण

साल्हावास खंड की आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन संस्कृतियों के लोग रेतीले क्षेत्र में निवास करते थे। इन संस्कृतियों के 71% आवास रेतीले क्षेत्र में स्थित है। आरंभिक एवं उत्तर हड़प्पाकालीन आवास थार मरुस्थल की उत्तर दिशा सीमा में स्थित हैं। कोई भी आरंभिक एवं उत्तर हड़प्पाकालीन आवास पूर्ण रूप से थार मरुस्थल में स्थित नहीं हैं। केवल 29% आवास जलोढ़ मैदान में स्थित हैं।

साल्हावास खंड के आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल ढ़ाकला-3 रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। साल्हावास खंड के उत्तर हड़प्पाकालीन आवास रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि कुल 5 पुरास्थल में से (उतर हड़प्पाकालीन आवास) 4 पुरास्थल (80%) रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं जो लगभग 9 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए हैं। रेतीले क्षेत्र में फैले हुए आवासों का औसत क्षेत्र 8.4 हेक्टेयर है। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के 31 पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। जो लगभग 89 हेक्टेयर (9%) क्षेत्र में फैले हुए हैं। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के पुरास्थलों का औसत आवास क्षेत्र 77.5 हेक्टेयर (69%) है।

तीनों संस्कृतियों की तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि आरंभिक हड़प्पाकाल के पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित थे जबकि उत्तर हड़प्पाकाल में 80% आवास रेतीले क्षेत्र में स्थित थे। जो पूर्व मध्यकाल में इन आवासों की संख्या घटकर 69% हो गई। अत: आरंभिक हड़प्पाकाल से लेकर पूर्व मध्यकाल में रेतीले क्षेत्र में आवासों की संख्या में गिरावट देखी जा सकती है। इसके अतिरिक्त उत्तर हड़प्पाकाल की अपेक्षा पूर्व मध्यकाल में रेतीले क्षेत्र में स्थित आवासों के कुल क्षेत्र में भी कमी परिलक्षित हुई है।

तालिका: 4.5 आवासों का रेतीले क्षेत्र में वितरण

सांस्कृतिक काल	आवासों की संख्या	आवासों का कुल क्षेत्र	औसत आकार	औसत क्षेत्र
आरंभिक हड़प्पाकाल	1 (100%)	3 हेक्टेयर (100%)	3	3 हेक्टेयर (100%)
उत्तर हड़प्पाकाल	4 (80%)	9 हेक्टेयर (86%)	2.1	8.4 हेक्टेयर (80%)
पूर्व मध्यकाल	31(69%)	89 हेक्टेयर (79%)	2.5	77.5 हेक्टेयर (69%)

इस सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि आरंभिक हड़प्पाकाल से संबंधित कोई भी पुरास्थल जलोढ़ मैदान में स्थित नहीं है। उत्तर हड़प्पाकालीन केवल एक पुरास्थल (कासनी-1) जलोढ़ मैदान में स्थित है। उत्तर हड़प्पाकालीन यह आवास-स्थल लगभग 1.5 हेक्टेयर क्षेत्र (14%) में फैला हुआ है तथा इस आवास का औसत आकार 2.1 हेक्टेयर है तथा औसत क्षेत्र 2.1 हेक्टेयर (20%) है। पूर्व मध्यकालीन 14 आवास स्थल जलोढ़क मैदान में स्थित हैं। ये आवास कुल 23.5 हेक्टेयर क्षेत्र (21%) में फैले हुए हैं। जलोढ़ मैदान में स्थित पूर्व मध्यकालीन आवासों का औसत आकार 2.5 हेक्टेयर है तथा इन आवासों का औसत आकार 35 हेक्टेयर क्षेत्र (31%)है।

उपर्युक्त तीनों संस्कृतियों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि पूर्व मध्यकाल में जलोढ़ मैदान में स्थित आवासों की संख्या में वृद्धि हुई तथा आवासों के कुल क्षेत्र, औसत आकार एवं आवासों के क्षेत्र में भी वृद्धि परिलक्षित होती है। आरंभिक हड़प्पाकाल में जलोढ़ मैदान में स्थित आवासों की संख्या शून्य थी जबकि उत्तर हड़प्पाकाल में आवासों की संख्या एक थी और मध्यकाल के समय यह बढ़कर 14 हो गई थी। इसी प्रकार उत्तर हड़प्पाकाल के दौरान आवास का कुल क्षेत्र 1.5 हेक्टेयर था जबकि पूर्व मध्यकाल में यह बढ़कर 23.5 हेक्टेयर हो गया। उत्तर हड़प्पाकाल के दौरान आवास का औसत आकार 2.1 हेक्टेयर था जबकि पूर्व मध्यकाल में यह बढ़कर 35 हेक्टेयर हो गया।

तालिका: 4.6 आवासों का जलोढ़ मैदान में वितरण

सांस्कृतिक काल	आवासों की संख्या	आवासों का कुल क्षेत्र	औसत आकार	औसत क्षेत्र
आरंभिक हड़प्पाकाल	00	00 हेक्टेयर	00	00हेक्टेयर
उत्तर हड़प्पाकाल	1 (20%)	1.5 हेक्टेयर (14%)	2.1	2.1 हेक्टेयर (20%)
पूर्व मध्यकाल	14 (31%)	23.5 हेक्टेयर (21%)	2.5	35 हेक्टेयर (69%)

4.1.1.3: पुरास्थल के स्वरूप के आधार पर आवास का वितरण

पुरास्थलों के आकार के आधार पर उनका स्वरूप निर्धारण किया गया है। पुरास्थल कई प्रकार के होते हैं जैसे- कार्यशाला, शवाधान,आवासीय पुरास्थल, कैंप प्रकार के पुरास्थल आदि। पुरास्थलों के आकार के आधार पर उन्हें नगर, कस्बा, बड़े गांव, छोटे गांव आदि की श्रेणी में बांटा गया है। साल्हावास खंड में बड़े कस्बों के अतिरिक्त कुछ बड़े गांव भी अस्तित्व में आए। ये कस्बे एवं बड़े गांव वस्तुओं का निर्माण कर क्षेत्रीय केंद्र की भूमिका निभाते थे।

साल्हावास खंड में आरंभिक हड़प्पाकाल का एक पुरास्थल है जो लगभग 3 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह पुरास्थल छोटे गांव की श्रेणी में आता है। उत्तर हड़प्पाकाल के दौरान कुल 5 पुरास्थल थे। ये पांच आवास ऐसे हैं जिनका आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से कम है। इनमें से ढ़ाकला-3 और कासनी-1 ऐसे आवास स्थल हैं जो बहु सांस्कृतिक हैं। सर्वेक्षण के दौरान इन आवासों से बड़ी संख्या में पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं जबकि उत्तर हड़प्पाकाल के सांस्कृतिक अवशेष सीमित संख्या में ही मिले हैं। इन पुरास्थलों का आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से भी कम है। यह संभव है कि उत्तर हड़प्पा काल के समय इनका आकार पूर्व मध्यकाल की तुलना में और भी कम है। तीन पुरास्थल ढ़ाकला-1, मुंढ़ेरा-3 और पटासनी केवल उत्तर हड़प्पाकालीन हैं जिनका आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि ये आवास छोटे गांव के रूप में बसे हुए थे।

पूर्व मध्यकाल के कुल 45 पुरास्थल हैं जिनमें से चांदपुर 6 हेक्टेयर और खुड्डन-2 पुरास्थल 8 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए हैं। इन दोनों आवासों का आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से अधिक है। अतः ये आवास बड़े गांव के रूप में बसे हुए थे। 43 पुरास्थलों का आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से भी कम है। ये आवास छोटे गांव के रूप में बसे हुए थे। साल्हावास खंड में पूर्व मध्यकाल में केवल 4.44% बड़े गांव एवं 95.55% छोटे गांव अस्तित्व में थे।

तालिका: 4.7 आवासों के स्वरूप का वितरण

सांस्कृतिक काल	**नगर (25-50 हेक्टेयर)**	**कस्बा (10-25 हेक्टेयर)**	**बड़े गांव (5-9.9 हेक्टेयर)**	**छोटे गांव (0-4.99 हेक्टेयर)**
आरंभिक हड़प्पाकाल	00	00	00	01 (100%)
उत्तर हड़प्पाकाल	00	00	00	05 (100%)
पूर्व मध्यकाल	00	00	02 (4.44 %)	45 (95.55%)

4.1.1.4: जनसंख्या के आधार पर आवासीय वितरण

जनसंख्या ज्ञात करने के लिए समय-समय पर भिन्न-भिन्न शोधकर्ताओं (वेलोस 1960, एडम 1965) ने विविध पद्धतियां अपनाई हैं। शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों से स्पष्ट है कि किसी आवास की जनसंख्या मुख्यतः आवास क्षेत्र, मानवीय शारीरिक अवशेषों, नृवंश विज्ञान के अध्ययन, पारिस्थितिकी एवं जनसंख्या संबंधी दशाओं, मानव द्वारा प्रयुक्त मृदभांड एवं अन्य सांस्कृतिक अवशेषों, भोज्य सामग्री के अवशेषों आदि पर निर्भर करती है। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या भी आवास क्षेत्र के आकार पर निर्भर करती है। हरियाणा में 1971 में 59.40 लोग प्रति वर्ग हेक्टेयर में निवास करते थे (स्टैटिसटिकल एब्स्ट्रेक्ट ऑफ हरियाणा 1971-72)। हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकाल की जनसंख्या को ज्ञात करने के लिए इसी आंकलन का प्रयोग किया गया है।

साल्हावास खंड में आरंभिक हड़प्पाकाल से संबंधित एक पुरास्थल ढ़ाकला-3 है। आरंभिक हड़प्पाकाल के दौरान इस पुरास्थल पर आवासित अनुमानित जनसंख्या 178.2 थी। यह पुरास्थल

रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। इस पुरास्थल की औसत जनसंख्या 178.2 थी। उत्तर हड़प्पाकाल में कुल अनुमानित जनसंख्या 623.7 थी। उत्तर हड़प्पाकालीन कुल 5 पुरास्थल हैं तथा उनकी कुल अनुमानित जनसंख्या 623.7 में से 534.6 (86%) लोग रेतीले क्षेत्र तथा 89.1 (14%) लोग जलोढ़ मैदान में निवास करते थे। प्रत्येक पुरास्थल की औसत जनसंख्या 124.74 थी। इस क्षेत्र में पूर्व मध्यकालीन 45 पुरास्थलों पर 6682.5 लोग बसे हुए थे। कुल अनुमानित जनसंख्या में से 5286.6 (89%) लोग रेतीले क्षेत्र में तथा 1395.9 (21%) लोग जलोढ़ मैदान में निवास करते थे। प्रत्येक पुरास्थल की औसत जनसंख्या 148.5 थी।

तालिका: 4.8 आवासों की जनसंख्या का वितरण

सांस्कृतिक काल	**कुल जनसंख्या**	**जलोढ़ मैदान में जनसंख्या**	**रेतीले क्षेत्र में जनसंख्या**	**आवास औसत जनसंख्या**
आरंभिक हड़प्पाकाल	178.2	00	100%	178.2
उत्तर हड़प्पाकाल	623.7	89.1 (14%)	534.6 (86%)	124.74
पूर्व मध्यकाल	6682.5	1395.9 (21%)	5286.6 (89%)	148.5

पर्सन (1971) और ब्लेंटेन (1972) ने मैक्सिको की घाटी में आवास योजना को जनसंख्या आधारित व्यवस्था पर वर्गीकृत किया था। भारत में माखनलाल (1982) ने इसी व्यवस्था को कुछ परिवर्तनों के साथ गंगा-यमुना दोआब में, शिंदे (1984) ने मध्य ताप्ती-घाटी में तथा परमार ने हरियाणा के भिवानी जिले में (2012) प्रयुक्त किया था। इन सभी शोधकर्ताओं के अध्ययन ने जनसंख्या आधारित आवास योजना के भिन्न-भिन्न वर्गों पर प्रकाश डाला। हालांकि अध्ययन क्षेत्र में पिछली पद्धतियों को कुछ परिवर्तनों के साथ अपनाया गया क्योंकि यह अर्ध शुष्क वाला क्षेत्र है जिसमें मौसमी नदियां एवं रेतीले टीले भी विद्यमान हैं। इन सभी कारकों के कारण इस क्षेत्र में बड़े आवास नहीं बन

पाए। ये जलवायु की दशाएं बड़े आवासों के लिए उपयुक्त वातावरण एवं पारिस्थितिकी नहीं प्रदान कर सके जिसके परिणामस्वरूप बड़े आवास अस्तित्व में नहीं आए। इसलिए इस अध्ययन क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए जनसंख्या को जानने हेतु वर्गीकरण किया गया है। आवासों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है। क्षेत्रीय केंद्र इस श्रेणी के अंतर्गत उन आवासों को सम्मिलित किया गया है जिनकी जनसंख्या 500 से अधिक है। उप-क्षेत्रीय केंद्र इस श्रेणी में उन आवासों को सम्मिलित किया गया है जिनके प्रत्येक आवास की जनसंख्या 250 से 500 के मध्य है। गांव के अंतर्गत वो आवासों आते हैं जिनके प्रत्येक आवास की जनसंख्या 100 से 250 के मध्य है। झोपड़ियां या छोटे गांव के अंतर्गत उन आवासों को सम्मिलित किया जाता है जिसमें प्रत्येक आवास की जनसंख्या 100 से कम है।

आरंभिक हड़प्पाकाल के समय ढ़ाकला-3 आवास की जनसंख्या 100 से 250 के मध्य थी। इसलिए दोनों ही आवास गांव की श्रेणी के अंतर्गत रखे गए हैं। उत्तर हड़प्पाकाल में कासनी-1 और मुंढ़ेरा-3 के आवास की जनसंख्या 100 से कम थी। अतः ये आवास स्थल छोटे गांव की श्रेणी में आते हैं। जबकि ढ़ाकला-3 और पटासनी आदि की जनसंख्या 100 से 250 के मध्य होने के कारण ये गांव की श्रेणी में आते हैं। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के समय 14 आवासों की जनसंख्या 100 से कम है इसलिए उन आवासों को छोटे गांव की श्रेणी में रखा गया है। 29 आवास ऐसे हैं जिनकी प्रत्येक की जनसंख्या 100 से 250 के मध्य है जिन्हें बड़े गांव की श्रेणी के अंतर्गत सम्मिलित किया गया है तथा दो आवास ऐसे भी हैं जिनकी जनसंख्या (बाबेपुर और खुड्डन-2) 250 से 500 के मध्य हैं जो क्षेत्रीय केंद्र की श्रेणी में आते हैं।

तालिका: 4.9 जनसंख्या आधारित आवास योजना का वितरण

सांस्कृतिक काल	**क्षेत्रीय केंद्र (500 से अधिक)**	**उप-क्षेत्रीय केंद्र (250-500)**	**गांव (100-250)**	**छोटे गांव (100 से कम)**
आरंभिक हड़प्पाकाल	00	00	01	00
उत्तर हड़प्पाकाल	00	00	03	02
पूर्व मध्यकाल	00	02	29	14